पंचम भाव से सम्बन्धित योग

वृहत पाराशर होरा शास्त्र के अध्याय 24 का सार – भाव के स्वामियों का प्रभाव

1 यदि लग्न का स्वामी पंचम भाव में हो तो जातक सामान्य सन्तति सौख्यपूर्ण होगा।

2 यदि द्वितीयेश लग्न में हो तो जातक पुत्रों से सम्पन्न व धनी, अपने परिवार से प्रतिकूल, कामातुर, क्रूर और दूसरे के कार्यो में तत्पर।

3 यदि द्वितीयेश द्वितीय भाव में हो तो जातक धनी, अभिमानी, दो या तीन स्त्रियों वाला और वियोग में पडा हुआ होता है।

4 यदि द्वितीयेश पंचम भाव में हो तो जातक धनवान होगा। केवल धनवान ही नही, बल्कि उसके पुत्र भी धनोपार्जन करने वाले होगें।

5 यदि द्वितीयेश द्वादश भाव में हो तो जातक साहसी, परिश्रमी और दूसरे के धन में तत्पर जबकि उसका ज्येष्ठ पुत्र उसे खुशी नहीं देगा।

6 यदि तृतीयेश तृतीय भाव में हो तो जातक भ्रातृ सुख से सम्पन्न होगा और धन, पुत्र से सम्पन्न, अत्यन्त व अदभुत खुशि से पूर्ण होगा।

7 यदि तृतीयेश पंचमस्थ हो तो जातक पुत्रों के सुख से सम्पन्न और सदगुणी होगा। यदि तृतीयेश के साथ पापग्रह का संयोग या दृष्टि हो तो जातक की पत्नी क्रूर स्वभाव वाली होती है।

8 यदि तृतीयेश नवम भाव में हो तो जातक को पैतृक सुख की कमी, स्त्रियों के द्वारा भाग्योदय, पुत्र सुख से सम्पन्न और अन्य खुशियो से सम्पन्न होगा।

विभिन्न भावों पर पंचमेश का प्रभाव

पंचम भाव

9 यदि पंचमेश लग्न में हो तो जातक विद्वान, पुत्र सुख से सम्पन्न, कंजूस, कुटिल व परधनहारक होता है।

10 यदि पंचमेश द्वितीयेश भाव मे हो तो जातक अनेक पुत्र व धन, यश आदि से सम्पन्न होता है। स्त्री जन प्रिय तथा परिजन पालक होता है।

11 यदि पंचमेश तृतीयेश भाव में हो तो जातक भाइयों का प्रिय, मिथ्याभाषी, कंजूस और अपने ही कार्य मे व्यस्त रहता है।

12 यदि पंचमेश चतुर्थ भाव में हो तो जातक खुश, मातृ-सुख से सम्पन्न, धनवान, बुद्धिमान, सचिव (मंत्री) या गुरू (राजगुरू या अध्यापक) होता है।

13 यदि पंचमेश पंचम भाव में शुभ ग्रह युत हो तो जातक पुत्र सुख से सम्पन्न व पाप ग्रह युत होने से पुत्र विहीन व पंचमेश पंचमस्थ होने से गुणवान तथा मित्र प्रिय होता है।

14 यदि पंचमेश षष्ठ भाव गत हो तो जातक के पुत्र उसके शत्रु के समान होते है या मर जाते है या दत्तक या क्रीत पुत्र होता है।

15 यदि पंचमेश सप्तम भाव में हो तो जातक सम्मानित, धार्मिक, पुत्र सुख से सम्पन्न व परोपकारी होता है।

16 यदि पंचमेश अष्टम भाव गत हो तो जातक अधिक सन्तान सुख रहित (अल्प पुत्र), कफ श्वाँस रोग युक्त, दुखी और क्रोधी होता है।

17 यदि पंचमेश नवम भाव में हो तो जातक का पुत्र राजा के समान होता है। खुद भी ग्रन्थ लिखने वाला और वंश में विख्यात होता है।

18 यदि पंचमेश दशमस्थ हो तो जातक राजयोग युत (राजा), बहुत सी खुशियाँ और बहुत प्रसिद्ध होता है।

19 यदि पंचमेश एकादश भाव में हो तो जातक बहुत विद्वान, जनप्रिय, ग्रन्थों का लेखक, बहुत कुशल तथा धनवान व पुत्र सुख से सम्पन्न होता है।

20 यदि पंचमेश द्वादश भाव में हो तो जातक पुत्र विहीन, पुत्र वियोग में पड़ा हुआ, दत्तक पुत्र या खरीदे हुए पुत्र से युक्त होता है।

21 यदि षष्ठेश पंचमस्थ हो तो जातक के धन आदि अस्थिर रहते हैं, वह स्वार्थी, दयावान व सुखी होता है। वह पुत्र व मित्रों से द्वेषता करने वाला होता है।

22 यदि षष्ठेश एकादश भाव में हो तो जातक शत्रु से धन प्राप्त करने वाला, साहसी, धनी, गुणी, मानी व पुत्र हीन होता है।

23 यदि सप्तमेश तृतीय भाव में हो तो जातक के मृत्य पुत्र होते हैं। कभी बहुत प्रयत्न से एक पुत्र जीवित रहता है। कभी पुत्रियों की सम्भावना रहती है।

24 यदि सप्तमेश दशम भाव में हो तो जातक धर्मात्मा, पुत्र, धन से सम्पन्न होता है, किन्तु स्त्री उसके अधिन नहीं रहती।

25 यदि सप्तमेश एकादश भाव में हो तो जातक को उसकी स्त्री के द्वारा धन की प्राप्ति होती है, उसके पुत्र सुख अल्प होता है किन्तु कन्याएँअ अधिक होती है।

26 यदि अष्टमेश पंचम भाव में हो तो जातक मन्द-बुद्धि वाला, अल्प सन्तान वाला, लम्बी आयु वाला और धनवान होता है।

27 यदि अष्टमेश दशम भाव में हो तो जातक पितृसुख विहीन, चुगलखोर तथा निष्क्रिय होगा। यदि शुभ ग्रह से दृष्ट या युत होने पर हानिकर नहीं होगा।

28 यदि नवमेश द्वितीय भाव में हो तो जातक विद्वान, सभी का प्रिय, धनी, इन्द्रिय जनित और स्त्री-पुत्रादि के सुखों से सम्पन्न होता है।

29 यदि नवमेश पंचम भाव में हो तो जातक पुत्रवाल, सौभाग्यशील, बड़ों के प्रति समर्पित, शूर, धर्मात्मा और विद्वान होगा।

30 यदि दशमेश पंचम भाव में हो तो जातक सभी प्रकार की विद्याओं से युक्त, हमेशा आनन्दित, धनी और पुत्रादि के सुखों से सम्पन्न होता है।

31 यदि दशमेश षष्ठ भाव में हो तो जातक पितृ सुख से विहीन, वह निपुण होते हुए भी दरिद्र और शत्रु से पीडित होता है।

32 यदि दशमेश नवम भाव में हो तो जातक ऐसा जातक यदि राजवंश में जन्म हो तो राजा और यदि साधारण परिवार में जन्म हो तो राजा के समान होता है। धन और पुत्रादि के सुखों से सम्पन्न होता है।

33 यदि एकादशेश पंचम भाव में हो तो जातक के पुत्र सुखी, शिक्षित और सदगुणी होते हैं। जातक स्वयं भी धार्मिक व सुखी होता है।

34 यदि द्वादशेश पंचम भाव में हो तो जातक पुत्र व विद्या से विहीन होता है। वह पुत्र के लिए तीर्थ स्थानों पर जाकर धन व्यय करता है।

35 यदि द्वादशेश दशम भाव में हो तो जातक राजद्वार से सम्बन्ध होकर धन व्यय व सामान्य पितृ सुख प्राप्त करता है।

36 यदि द्वादशेश एकादश भाव में हो तो जातक को हानि होती है, दूसरों के द्वारा उपर उठाया जाता है और कभी कभी दूसरों के धन से लाभ होता है।